

ਬੰਠ ਕਯਾਯ-

।

।

।

ਉਪਸੰਹਾਰ

उपसंहार

धरती पर मनुष्य के प्रादुर्भाव के साथ ही दर्शन शास्त्र का जन्म हुआ । उसकी चिन्तन शीलता तथा उसके तर्क नैपुण्य ने उसे विभिन्न प्रश्नों पर सोचने के लिए बाध्य किया, जो अन्ततः दर्शन शास्त्र का रूप ग्रहण कर सका । वैदिक संहिताओं में तत्कालीन ऋषियों का दार्शनिक चिन्तन नासदीय सूक्त, हिरण्यगर्भ सूक्त, अस्यवामीय सूक्त तथा पुरुष सूक्त जैसे प्रकरणों में देखा जा सकता है । आगे चलकर उपनिषदों में भारतीय दर्शन को एक नया आयाम मिला । गुरु-शिष्य संवाद के रूप में लिखे गए भारतीय मनोधा के सर्वोच्च उदाहरण ये उपनिषद् दर्शन शास्त्र के अन्तर्गत उठने वाले सभी प्रश्नों का सन्तोषप्रद समाधान प्रस्तुत करते हैं । इनकी विवेचन पद्धति में न तो कोई जटिलता है न कोई दुर्बोध्यता, बल्कि कहीं-कहीं उपनिषद् प्रणेताओं ने काव्यात्मक शैली, रोचक उपाख्यानों तथा रूपकात्मक एवम् आलंकारिक वर्णन शैलियों के द्वारा इन्हें और अधिक ग्राह्य तथा मनोज्ञ बना दिया है ।

कालान्तर में उपनिषदों में व्यक्त की गई दर्शन प्रणालियों को व्यवस्थित दार्शनिक सम्प्रदायों का रूप दिया गया । फलतः सांख्य और योग, न्याय-वैशेषिक, वेदान्त तथा मीमांसा नाम वाले वेदमूलक दर्शनों का प्रादुर्भाव हुआ । सूत्र शैली में लिखित होने के कारण षड्दर्शनों के ये मूल ग्रन्थ विस्तृत व्याख्या की अपेक्षा रखते थे । अतः समय आने पर विभिन्न विचक्षण दार्शनिकों ने अपनी अपूर्व मेधा के बल पर इन दर्शन सूत्रों की जो व्याख्याएं लिखीं, जो अपने मौलिक चिन्तन के कारण अपने आप में एक स्वतन्त्र ग्रन्थ कहलाने की अधिकारिणी होने पर भी इन व्याख्याकारों की विनम्रता ने इन ग्रन्थों को भाष्य या व्याख्या के नाम से ही अभिहित किया । योगदर्शन पर व्यास-भाष्य, सांख्यदर्शन पर विज्ञानभिक्षु का पुवचन भाष्य तथा वाचस्पति की सांख्य तत्त्वकौमुदी, न्याय पर वात्स्यायन का भाष्य, वैशेषिक पर प्रशास्तपाद भाष्य, जैमिनीय सूत्रों पर शाबर भाष्य तथा वेदान्त सूत्रों पर शंकर भाष्य ये सभी भारतीय दर्शन के अद्वितीय

मानक ग्रन्थ हैं । यद्यपि प्रत्येक दर्शन में विश्व प्रपंच की व्याख्या करने के लिए किसी न किसी विशिष्ट दृष्टि को अपनाया गया है, किन्तु सर्वोपरि ब्रह्म-तत्त्व के निरूपण में लिखा गया वेदान्त दर्शन भारत के तत्त्व चिन्तन का मूर्धा-स्थानीय है । कालान्तर में शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क तथा वल्लभ आदि मध्यकालीन आचार्यों ने स्व-स्व दृष्टिकोणों से इन सूत्रों की व्याख्याओं में प्रचुर श्रम किया जिसके परिणामस्वरूप अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद तथा शृङ्गाद्वैतवाद जैसे विभिन्न दर्शनों का उद्घाटन हुआ । इसी बीच वादरायण रचित मूल सूत्रों की व्याख्या में उपर्युक्त दार्शनिकों तथा उनके अनुयायियों ने अपनी-अपनी धारणाओं की पुष्टि में जिस प्रचुर ग्रन्थ राशि का निर्माण किया वह भारतीय तत्त्व-चिन्तन का एक समृद्ध पक्ष हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है ।

उन्नीसवीं शती के आविर्भाव के साथ-साथ यह दार्शनिक खण्ड-मण्डल सर्वोच्च सीमा तक पहुँच चुका था । ऐसा लगता था मानो अब इसमें कुछ अधिक लिखने की सम्भावना नहीं रही है । अरब देश के राजनैतिक और सामाजिक क्षितिज पर भी उषा की नव किरणें दिखाई पड़ने लगी थी । इतिहासविदों ने इसे नवजागरण या पुनर्जागरण काल का नाम दिया है । इस युग में राष्ट्रीय चेतना का विकास, सामाजिक परिवर्तन तथा धार्मिक जागृति के कारण हुआ । बंगाल में ब्रह्म समाज की स्थापना राजा राममोहन राय ने की, जिन्होंने प्रचलित हिन्दू धर्म के बहुदेववादी रूप से छिन्न होकर एकेश्वरवाद को उपनिषदों के ब्रह्मवाद के सहारे जुड़ा किया, । राममोहन राय के परवर्ती महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर मूलतः एक आस्थावान् भक्त कोटि के पुरुष थे । इनकी आध्यात्मिक भक्ति-साधना उपनिषद् प्रतिपादित एक अद्वय, चिन्मय, प्रज्ञानघन, आनन्द और स्वरूप ब्रह्म की चेतना से ही अनुप्राणित थी, किन्तु ब्रह्मसमाज के ही अन्य नेता केशव चन्द्र सेन अपने दार्शनिक विचारों में पूर्व से अधिक पश्चिम के ऋणी रहे । विशेषतः ईसाइयत के तत्त्व ज्ञान ने उन्हें विस्मय विमुग्ध किया और वे अपने नैतिक विचारों

के लिए ईसा मसीह के अवदान को कभी भुला नहीं सके । प्रसंगोपात्त इस शोध ग्रन्थ में ब्रह्मसमाज के इन तीनों महापुरुषों के दार्शनिक सिद्धान्तों को यथा-स्थान सुस्पष्ट किया गया है ।

आर्यसमाज के प्रवर्तक दयानन्द सरस्वती की प्रेरणाएं मुख्यतया वैदिक संहिताओं तथा उनके अनुवर्ती शास्त्रीय साहित्य से जुड़ी रही । चतुर्थांश में प्रवेश के समय वे इस देश के इतर सैन्यासी समुदाय की भाँति अद्वैत वेदान्त के कट्टर पोषक रहे । स्वानन्द रचित वेदान्तसार का उन्होंने उस काल में गम्भीर अध्ययन भी किया था किन्तु कालान्तर में वे वेदान्त की शंकरकृत व्याख्या से सन्तुष्ट नहीं रह सके और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि न केवल शंकर ने अपितु वैयासिक सूत्रों के अन्य व्याख्याकारों ने भी स्वमनोरथ के अनुकूल जो निष्कर्ष निकाले हैं, वे सूत्रप्रणेता ऋषि की भावना के सर्वथा अनुरूप नहीं हैं । स्वामी दयानन्द के अनुसार ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन अनादि सत्ताएं हैं जिनके अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण उन्हें "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" जैसे ऋग्वेद में स्पष्ट रूप से मिला । यद्यपि दयानन्द सरस्वती ने अपने दार्शनिक मन्तव्यों को कोई विशिष्ट नाम नहीं दिया परन्तु उनके अनुवर्ती विद्वानों ने उसे त्रैतवाद की संज्ञा प्रदान की । ईश्वर और जीव की पृथक्ता मानने के कारण दयानन्द भी एक दृष्टि से द्वैतवादी ही हैं और संसार के जड़ उपादान कारण को निश्चित वस्तु तत्त्व स्वीकार करने के कारण वे यथार्थवादी दार्शनिक हैं ।

जैसा कि इस शोध ग्रन्थ के प्रारम्भिक अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि भारतीय नव जागरण का एक प्रमुख कारण पश्चिम के सम्पर्क में आना भी था । पुनर्जागरण के नेताओं ने तो पश्चिम से बहुत कुछ लिया ही । पश्चिम ने भी भारत से बहुत कुछ सीखने का प्रयास किया । भारत के पुरातन ज्ञान- विज्ञान से आकृष्ट होकर कर्नल आल्काट और मैडम ब्लैवेट्स्की ने जिस संस्था की स्थापना की वह कालान्तर में एक अन्तर्राष्ट्रीय धर्मान्दोलन के रूप में उभरा ।

इसी थियोसोफी फ्ल सोसाइटी ने पश्चिमी देशों में प्रचलित ईसाई धर्म के मत विश्वासों से सन्तुष्ट न रहकर अपनी जिज्ञासाओं का शमन करने के लिए भारत की ओर दृष्टि केन्द्रित की। फलतः भारतीय धर्म और दर्शन को एक नए दृष्टिकोण से परखा गया। यह तो सत्य है कि थियोसोफी के संस्थापक द्वय तथा उनके अनुवर्ती श्रीमती एनी बेसेन्ट ने इस आन्दोलन को जिस आधारभूमि को सुस्थापित किया है, उसमें पौरस्त्य तत्त्व चिन्तन के साथ साथ कुछ उनकी निजी कल्पनाएं भी समाविष्ट हो गई हैं। यही कारण है कि थियोसोफी का दर्शन कोई सुनिश्चित साम्प्रदायिक तत्त्व-चिन्तन का रूप धारण नहीं कर सका। यद्यपि इसके लिए कुछ पश्चात्त्वर्ती विद्वानों के कुछ प्रयास भी हुए।

लगभग इसी समय रामकृष्ण परमहंस तथा उनके विश्व विख्यात शिष्य स्वामी विवेकानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। इन दोनों के वैचारिक आन्दोलन में इनसे पूर्ववर्ती समाज संस्थापकों तथा सुधारकों की विचार पद्धतियों में पर्याप्त अन्तर है। धर्म और समाज में ये महानुभाव किसी भी प्रकार के आपततः किए जाने वाले परिवर्तनों के विरोधी हैं। वे "पुराण" मात्र को "साधु" तो नहीं मानते किन्तु नवीन को ग्रहण करने की ललक में पुराण तत्त्व सर्वथा बहिष्कार्य है, इस धारणा का भी उन्होंने कभी समर्थन नहीं किया। दार्शनिक दृष्टि से देखें तो ये आचार्य शंकर द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद के ही समर्थक हैं, किन्तु अपने दार्शनिक सिद्धान्त को प्रतिपादित करने की इन्की अपनी मौलिक प्रणाली है। रामकृष्ण परमहंस ने ब्रह्म की चरम और अद्वितीय सत्ता को शास्त्रीय प्रमाणों या परम्परा सिद्ध युक्तियों एवं प्रमाणों से सिद्ध न कर जनसाधारण की समझ में आने वाले लौकिक दृष्टान्तों तथा सामान्य कथानकों से पुष्ट किया। जब कि विवेकानन्द ने अद्वैत सिद्धान्त को भारतीय दर्शन की सीमा रेखा से पृथक् कर विश्व का एकमात्र सर्वस्वीकृत दार्शनिक मत उद्घोषित किया। भारतीय दर्शन का अध्ययन अब तक वेद संहिताओं में आए दार्शनिक सूक्तों से लेकर मध्ययुग की समाप्ति तक के प्रकरण ग्रन्थों तक तो निरवधि गति से चलता रहा, किन्तु विगत शताब्दी के पुनर्जागरण के विधायक महापुरुषों ने अपनी दार्शनिक मनीषा को जिस रूप में प्रस्तुत किया है उसी को सुस्पष्ट रूप में करना इस शोध-प्रबन्ध का विनम्र प्रयास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उदयवीर शास्त्री सांख्य दर्शन विद्योदय भाष्य
विरजानन्द वैदिक संस्थान, 2017 वि.
2. उमेश मिश्र भारतीय दर्शन
राजार्घ्य पुरुषोत्तम दास टंज
हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग,
लखनऊ चतुर्थ संस्करण- 1975.
3. कौशल्या देवी मोहता "बौद्धिकयोनी" रचित "श्रीगुरु-चरणेषु"
॥ अनु. ॥
पर श्रीमती एनी बेसेन्ट तथा सी.
डब्ल्यू नेल्सीटर का भाष्य, आनन्द
पब्लिशिंग हाउस, थियोसोफिकल,
सोसाइटी, वाराणसी- 1949.
4. गौरी शंकर भट्ट भारतीय नवजागरण प्रणेता तथा
आन्दोलन साहित्य सदन देहरादून
1968.
5. गोकुल चन्द्र दीक्षित न्याय दर्शन,
॥ अनु. ॥
आर्ष ग्रन्थ रत्नाकर बरेली, 1987 वि.
6. जगदीश शास्त्री ॥ व्या. ॥ उपनिषत्संग्रहः,
मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली-1968.
7. जे. एन. सिन्हा भारतीय दर्शन,
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक-
प्रकाशक- आगरा-3 1974.
8. द्वारिका दास शास्त्री न्याय दर्शनम् ।
॥ सम्पा. ॥
वात्स्यायन भाष्य हिन्दी रूपान्तर
सहित चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस,
वाराणसी ।

9. द्वारिकानाथ तिवारी रामकृष्ण लीलामृत,
श्रीरामकृष्ण आश्रम, 1994 सं.
10. द्वारिका प्रसाद श्रीवास्तव भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण पर
धार्मिक आन्दोलनों का प्रभाव कैलाश
पुस्तक सदन पाटनकर बाजार,
खानियर ।
11. दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश
रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़
§सोनीपत हरियाणा§ प्रथम संस्करण
12. दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदऋषिभाष्यभूमिका,
वैदिकग्रन्थालय अजमेर ।।वां संस्करण
13. न. कि. देवराज भारतीय दर्शन,
उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी-
लखनऊ ।
14. पी. पावरी ब्रह्मविद्या की प्रथम पुस्तक,
फर्स्ट बुक आफ थियोसोफी का हिन्दी
अनुवाद । इण्डियन बुक शॉप, थियोसो-
फिकल सोसाइटी कमन्स, वाराणसी-
1975.
15. बलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन,
चौखम्बा ओरियन्टालिया वाराणसी।
द्वितीय संस्करण- 1979.
16. बी. केशवचन्द्र थियोसोफी का व्यवहारदर्शन
§सी. जिनराजदास§ आनन्द प्रकाशन
लिमिटेड, कमन्स, बनारस- 11955.

17. भवानीलाल भारतीय स्वामी दयानन्द के दार्शनिक सिद्धान्त
प्रका. महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान,
पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़-
1983.
18. भवानीलाल भारतीय नवजागरण के पुरोधाय : दयानन्द
सरस्वती वैदिक पुस्तकालय परोपकारिणी
सभा, दयानन्दाश्रम, अजमेर,
प्रथम संस्करण 1983.
19. भवानीलाल भारतीय महर्षि दयानन्द और स्वामी
विवेकानन्द सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि
सभा, नई दिल्ली- 2 द्वि. सं.
20. माधुरी बिहारी ॥ अनु. ॥ कर्म सिद्धान्त : एक अध्ययन
॥ ऐनी बेसेन्ट ॥ इण्डियन बुक शॉप,
थियोसोफिकल सोसाइटी कमन्स,
वाराणसी-1. 1968.
21. योगेन्द्रकुमार शास्त्री सैतवाद का उद्भव और विकास,
आर्यसमाज कलकत्ता, 2038 वि.
22. वाचस्पति गैरोला भारतीय दर्शन,
लोक भारती प्रकाशन
23. विवेकानन्द विवेकानन्द साहित्य खण्ड 1-10॥
अद्वैत आश्रम 4 डिग्री एण्टाली रोड
कलकत्ता- 14. जन्मशती संस्करण
24. विवेकानन्द वेदान्त रामकृष्ण मठ, नागपुर
धन्तली, नागपुर-440012., 1982.
25. वेदप्रकाश गुप्त दयानन्द दर्शन,
मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ- 1973.

26. राधाकृष्णन्* भारतीय दर्शन, भाग-2,
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली-6.
27. रामशंकर भट्टाचार्य §सम्पा. § सांख्य सूत्रम्
विज्ञानभिक्षु भाष्यान्वित भारतीय
विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सं. 2022 वि.
28. रामधारी सिंह "दिनकर" संस्कृति के चार ऋयाय
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली- 1957.
29. रामचन्द्र शुक्ल §अनु. § थियोसोफी के मूल सिद्धान्त
§सी. जिनराजदास § भाग-1-3
आनन्द प्रकाशन लिमिटेड, बनारस
1954.
30. राम जीवन सिंह ब्रह्म विद्या
बिहार थियोसोफीकल फेडरेशन,
थियोसोफीकल हेडक्वार्टर्स, पटना-1952.
द्वितीय संस्करण- 1952.
31. रामशंकर भट्टाचार्य §व्या § सांख्य तत्त्व कौमुदी,
वाचस्पति मिश्र कृत तत्त्वकौमुदी का
हिन्दी अनुवाद ।
मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली,
द्वितीय संस्करण ।
32. राममूर्ति शर्मा §व्या § वेदान्त सार,
नेशनल पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1975.
33. राजेश्वर प्रसाद योग: एक परिचय §एनी बेसेण्ट §
चतुर्वेदी §अनु. § इण्डियन बुक शॉप थियोसोफीकल
सोसाइटी कमन्स वाराणसी प्रथम
हिन्दी संस्करण, 1980

34. रायबहादुर पंड्या बैजनाथ थियोसोफी परिचय सी. डब्ल्यू लेखीटर की "टेक्स्टबुक ऑफ थियोसोफी, के आधार पर लिखित । इण्डियन बुक शॉप थियोसोफिकल सोसाइटी वाराणसी-। 1956.
35. रोमा रोना रामकृष्ण परमहंस ॥सम्पादक॥ रघुराजगुप्त अनु. धनराज वेदालंकार इलाहाबाद लोकभारतीय प्रकाशन, 1968 ई. व्यावहारिक आत्म-विद्या
36. रविशरण वर्मा ॥ अनु॥ ॥ एच.पी ब्लैवेट्ट स्की ॥ आनन्द पब्लिशिंग हाउस कमच्छा बनारस- 1950॥
37. रुद्रदत्त शर्मा ॥ अनु॥ ॥ पार्तजल योग दर्शन ॥ व्यास भाष्य॥ आचार्यवर्त यंत्रालय कलकत्ता, 1889 ई. प्रथम संस्करण
38. लक्ष्मी देवदास गांधी ॥ अनु॥ ॥ रामकृष्ण उपनिषद् ॥ चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली द्वितीय संस्करण- 1981.
39. सत्यानन्द सरस्वती ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य सत्यानन्दी दीपिका सहित गोविन्दगढ़, टेदीनीम वाराणसी ।
40. सूर्यकान्त त्रिपाठी ॥ अनु॥ ॥ श्रीरामकृष्ण वचनामृत भाग-1-3. श्रीरामकृष्ण आश्रम नागपुर तृतीय संस्करण 1963.
41. सत्येन्द्रनाथ मजूमदार विवेकानन्द चरित श्रीरामकृष्ण आश्रम, धन्तौली, नागपुर पंचम संस्करण ।

42. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार श्रीमद् भगवद् गीता
विजय कृष्ण लखनपाल एण्ड कम्पनी,
विद्या विहार बलवीर ऐवेन्स देहरादून॥
43. श्री निवास शास्त्री स्वामी दयानन्द और दर्शन
कुल्लुत्र विश्वविद्यालय 1977.
ब्राह्म धर्म
आदि ब्रह्म समाज कल्कत्ता 1817
शकाब्द ।
44. हेमचन्द्र विद्यारत्न
॥सम्पा॥ उपनिषद्
गीताप्रेत गोरखपुर।
45. हरिकृष्णदास मोयन्दका
॥व्या॥ पार्तजल योग दर्शनम् ।
व्यास भाष्य सहित मोतीलाल
बनारसीदास वाराणसी- 1974.
46. हरिहरानन्द आरण्य
॥व्या॥

ENGLISH-BOOKS

1. Andrews, C.F. Renaissance in India,
United council for mission ary
Education,London- 1912.
2. Aurobindo The Renaissance in India,(First
Published in Aug-Nov.) Issues of
Arya-1918.
3. Besant, Annie Theosophy as a Philosophy of
thought and Action Besant Centenary
1947, 1847-1947.
4. Besant, Annie The Ancient Wisdom An outline of
Theosophical Teachings.
The Theosophical publishing
House, Adyar, Madras.India-1959.
5. Besant, Annie The nature of Theosophical Proofs,
Adyar Pamphlets No-130,Theosophical
publishing House, Adyar,Madras
India-1921.
6. Blavatsky ,H.P. The key to Theosophy, Theosophical
University Press Covina California,
1946.
7. Blavatsky, H.P. What Theosophy is ? (U.L.T.Pamphlet
No.-2) Theosophy Company (India)
Ltd. 51,Esplanade Road,Bombay.
8. Blavatsky,H.P. Fundamentals of Theosophy, United
Lodge of Theosophists,847 E. 72nd
St. Newyork 21.N.V.

9. Chirol, V India- Old & New Macmillan & co
1921.
10. Christie, W. Theosophy for beginners, Theosophical
Catherine Publishing House, Adyar, India-1928.
11. Collet, Sophia Life & letters of Raja Ram Mohan Roy
Dobson, 2nd Edition, Ed. by Prabhat Chandra
Ganguli and Dalip Kumar Biswas, Calcu-
tta, 1962.
12. Farkuhar, J.N. J.N. Modern Religious movements in India
Macmillan & Co-1929.
13. Gupta, Atul- Studies in the Bengal Renaissance
Chandra, National Council of Education Jhadvapur
14. Jacharias, H.C.E. Renaissance India Oxford University
Press, London-1938.
15. Jinarajadasa , First Principles of Theosophy,
C, The Theosophical publishing House,
Adyar, Madras 20, India-1960
16. Jinarajadasa, Practical Theosophy, The Theosophical
C, Publishing House, Adyar, Madras 20,
India- 1918.
17. Joshi, V.C. Ram Mohun Roy and the Process of
Modernization in India. Vikas
Publishing House, Pvt. Ltd. Delhi-
1975.

26. Satya Prakash- A critical Study of Dayanand, Arya
Pratinidhi Sabha Rajasthan, Ajmer-1938.
27. Sen Keshub- Lectures in India 4th Edition Calcutta,
Chander. 1946.
28. Sen Keshub- Jeevan Veda: tr. by Jamini Kanta Kour
Chander. 2nd Ed. Navavidhan Pub. committee-1955.
29. Sen Keshub- Brahmo Samaj: The new Dispensation 2nd
Chander. Ed. Brahmi Soc. Calcutta-1915.
30. Sen, Prosanto - Biography of a new faith-Volume one
Kumar, Thacker, Spink & Co, (1933) Ltd. Calcutta.
31. Sarma, D.S.- Renaissance in Hinduism, Bhartiya Vidya
Bhavan, Bombay-1956.
32. Sarma, D.S. - Hinduism through Ages. Bhartiya Vidya-
Bhavan Bombay-1956.
- 33- Sri. Ram - A Theosophist looks at the world.
The theosophical publishing House, Adyar
Madras, India-1950.
34. Sri Prakash. Annie Besant Bhartiya Vidya Bhavan
Chaupatty Bombay- 1954.

35. Shastri, S.N.- The History of the Brahmo Samaj
Sadharaṇ Brahmo Samaj, Bidhan Sarani,
Calcutta-1974.
36. Tagore, Devender- Atmajiwani (Autobiography)
Nath, 4th Edition. ed. by Prabhat Chander
Ganguli Calcutta, 1962.
37. Tagore, Saumyendra Nath- Raja Ram Mohun Roy, Publication Division
Ministry of Information and Broad-
casting Government of India -1973.
38. Upadhyaya, Philosophy of Swami Dayanand Kala-
Ganga Prasad, Press Prayag-1955.
39. Unknown- Leaders of the Brahmo Samaj, G.A.
Nateson & Company Madras-1926.
40. Vyas, K.C. The Social Renaissance in India,
Vora & Co, Bombay-1957.

.....

